ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 105-107
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

मृदुला सिन्हा के उपन्यास 'ज्यों मेंहदी को रंग में' दिव्यांग नारी का जीवन संघर्ष

मंजू चौरसिया
शोध अध्येता– म0गां0 काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ0प्र0), भारत

Received-02.08.2023, Revised-09.08.2023, Accepted-14.08.2023 E-mail: manjuchaurasia79@gmail.com

सारांशः ***स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् से ही हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श जैसे अनेक विमर्श हाशिए के समाज को मुख्य धारा में जोड़ने के उद्देश्य से चर्चा में लाए गए हैं। इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक में स्थापित दिव्यांग विमर्श इसी उद्देश्य को आगे बढ़ाता है। उपन्यास 'ज्यों मेंहदी को रंग' की नायिका शालिनी के माध्यम से लेखिका ने एक दिव्यांग स्त्री के जीवन संघर्ष को दर्शाया है। सुन्दर, सुशील होने पर भी दिव्यांग स्त्री पारिवारिक उपेक्षा का शिकार बनती है, परन्तु अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए वह किसी पर बोझ नहीं बनती। वह अपने आत्मबल और अकेले चलने के साहस के बल पर अपने जीवन की दिशा स्वयं तय करती है। इस शोध पत्र द्वारा उपन्यास में वर्णित दिव्यांग नारी के जीवन संघर्ष पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है।***

कुंजीभूत शब्द– दिव्यांग, दिव्यांग नारी, उपन्यास, विमर्श, संघर्ष, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श।

डॉ0 विनय कुमार पाठक के शब्दों में–"यह निर्विवाद है कि साहित्य ही समाज में किसी विषय को महत्त्व व दिशा प्रदान करता है, लेकिन कभी–कभी ऐसा भी होता है कि आवश्यक विषय छूट जाते है और अनावश्यक विषय चर्चा में आ जाते हैं।"[1]

दिव्यांगता अपने आप में एक चुनौती है। दिव्यांग व्यक्ति प्रतिदिन अपनी छोटी–छोटी जरूरतों के लिए संघर्षरत रहता है। समाज और परिवार की उपेक्षा उसे अन्दर तक झकझोर कर रख देती है। पुरूष प्रधान समाज में दिव्यांग स्त्री के लिए यह चुनौती दोगुनी हो जाती है। अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत स्त्री यदि दिव्यांग हो तो उसकी चुनौतियाँ स्वतः ही बढ़ जाती है। साहित्य में दिव्यांग विमर्श आधारित रचनाएं समाज को दिव्यांग जनों की पीड़ा की समानुभूति कराता है।

'ज्यों मेंहदी को रंग' हिन्दी में लिखित मृदुला सिन्हा का एक ऐसा उपन्यास है, जो संभवतः पहली बार समग्र रूप से दिव्यांगता पर आधारित है। लेखिका ने उपन्यास में ऐसे पात्रों की सृष्टि की है जिनका समाज के साथ–साथ परिवार द्वारा भी उपेक्षा और तिरस्कार किया जाता है। ऐसे में इनके मन में घोर निराशा और अंधकार घर कर जाती है और वे विवश होकर बोझिल जीवन जीने के लिए बाध्य होते हैं। परन्तु इन्हीं में कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो अपने स्वाभिमान को जीवित रख, आत्मबल एवं साहस के द्वारा दिव्यांगता से उपजी चुनौतियों का सामना करते हैं और अपने जीवन को एक नई दिशा देते हैं। वे अपने साहसिक कार्यो से अन्य दिव्यांगों के साथ–साथ सामान्य जन के लिए भी प्रेरणा स्रोत बनते हैं।

उपन्यास में शालिनी को इसी जीवन संघर्ष को जीते हुए दिखाया गया है। शालिनी बेहद सुन्दर, सुशील, मृदुभाषी और संस्कारी लड़की है। ससुराल में पति का प्रेम तो उस पर भरपूर बरसता ही है साथ में सास भी उसकी इस छवि को देखकर फूले नहीं समाती। वह भी उसे बहुत स्नेह व दुलार करती है। सास को शालिनी के पैरों में घुँघरूदार पायल बहुत ही जँचती है। वह चाहती है कि शालिनी हमेशा ऐसे ही घुँघरूदार पायल पहन कर चलती रहे और उसकी सुमधुर ध्वनि से घर में नववधू के आगमन का एहसास होता रहे। प्यारा सा परिवार पाकर शालिनी खुद को बहुत सौभाग्यशाली समझती थी। बचपन से ही उसकी चाल में तेजी थी। हमेशा कूदती हुयी सबसे आगे निकल जाती थी। किसी के टोकने से भी उसकी यह आदत नहीं छूटती थी। उसकी यही आदत उसके लिए एक दिन कितनी बड़ी मुसीबत बन जाएगी इसका उसे अन्दाजा भी नहीं था। एक दिन पति के साथ पहेलजा घाट से स्टीमर की यात्रा कर उतरते समय स्टीमर के डेक में उसके दोनों पैर फँस जाते हैं और देखते ही देखते दोनों पैर कटकर गंगा की तेज धारा में विलीन हो जाते हैं। इस दुर्घटना के बाद शालिनी के जीवन की दिशा ही बदल जाती है। उसका खुशहाल जीवन विकलांगता के दंश से भर जाता है। अब वही सुन्दर, सुशील और सबके दिलों पर राज करने वाली शालिनी आजीवन अपाहिज बन सभी के लिए बोझ लगने लगती है। शालिनी अपने पिता के मित्र शर्मा जी के माध्यम से उपचार के लिए दद्दा जी के संस्थान में आती है। पहले तो पति और परिवार के अन्य सभी सदस्य उसकी सेवा में लगे रहे, परन्तु यथार्थ स्थिति का बोध सभी की मानसिकता को परिवर्तित करता गया और धीरे–धीरे सभी उससे कटते गये पति राजेश का कथन उसके प्रति कितना उपेक्षापूर्ण है– "बोलो! कान तो खुले हैं मेरे।"[2]

वह सास से जब बात करना चाहती है तो सास बिलखते हुए उससे कहती है कि– "बहू मेरे बेटे का क्या होगा? पूरी जिन्दगी पड़ी है इसकी।"[3] सास को बेटे की चिन्ता हुयी पर शालिनी की कौन करेगा? परिवार, पड़ोसी रिश्तेदार सभी को चिन्ता थी तो राजेश की। उसकी पूरी जिन्दगी एक अपाहिज के साथ कैसे बितेगी? शालिनी के दिल पर क्या बीत रही थी? बिना पाँव के वो अपनी सारी जिन्दगी कैसे बितायेगी? इसकी चिन्ता किसी को न थी। सभी राजेश को दूसरी शादी की सलाह दे रहे थे।

एक दिन अस्पताल की खिड़की से शालिनी ने एक स्त्री को अपनी सास से बात करते सुना– "राजेश की माँ! बेटे को समझाओ। अभी वह नासमझ है। दुनियादारी समझता नहीं। पूरी जिन्दगी पड़ी है उसकी। गाँव की किसी गरीब लड़की से शादी कर दो जो उसे भी संभालेगी और खटिया पर पड़ी अपाहिज सौत को भी।"[4] स्त्री का वक्तव्य शालिनी को भीतर तक चीर कर रख देता है।

यद्यपि ससुराल के लोग शालिनी से बहुत प्रेम करते थे, परन्तु नियति को स्वीकार कर धीरे–धीरे सभी शालिनी से दूर होते चले जाते हैं। शालिनी भी परिवार की वंशवृद्धि और पति के भावी जीवन को ध्यान में रखते हुए राजेश को दूसरा विवाह करने की सलाह

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

देती है। शालिनी के उपचार में अनिश्चय की स्थिति और लम्बे समयावधि के चलते धीरे–धीरे संस्थान में ससुराल वालों का आना–जाना लगभग अवरूद्ध हो जाता है।

परिवार वालों की उपेक्षा और विकलांगता का दंश झेलती शालिनी स्वाभिमान की प्रतिमूर्ति है। जब उसे पता चलता है कि पति ने दूसरा विवाह कर लिया है, तब वह ससुराल से नाता तोड़ देती है, और जिस संस्थान ने उसे नया जीवन दिया है। उसके प्रति पूरी तरह से समर्पित हो जाती है और दद्दा जी के समझाने के बाद भी वह अपना निश्चय नहीं बदलती है। वह अधिकार पूर्वक संस्थान में काम करती है। दद्दा जी की अनुपस्थिति में वह सब कुछ अच्छे से संभालती है। शालिनी की सास से उसके पैरों का सजीव वर्णन सुनकर दद्दा जी उसके लिए बिल्कुल वैसा ही पैर बनवाते हैं जिसमें घुँघरू भी लगा रहता है। शालिनी उसे देखते ही चीख उठती है जैसे साक्षात् उसके ही पाँव प्रकट हो गये हो। वह महिमा से पूछती है कि– "महिमा! एक बात तो बता! दद्दा जी को कैसे पता चला कि मेरे पाँव हू–ब–हू ऐसे ही थे? आकृति, रंग–रूप, साज–सज्जा कुछ भी भिन्न नहीं है। दद्दा जी अन्तर्यामी हैं क्या? या कहीं गंगा मैया ने इन्हें स्वप्न में मेरे पैर के नक्शे दिखा दिए? इन्हें कैसे पता चला कि इतने स्वाभाविक पाँवों को ही मेरी सास, मेरे पति स्वीकार कर सकेंगे?"[5]

शालिनी इसी भ्रम में थी कि पाँव लगने के बाद पति और सास उसे स्वीकार लेंगे और वह एक बार फिर अपने परिवार के साथ खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकेगी, परन्तु राजेश की दूसरी शादी की बात पता लगने पर उसका यह भ्रम टूट गया। जैसे–तैसे खुद को बाहर से संयत दिखाने का प्रयत्न करती शालिनी भीतर से कितनी टूटी और बिखरी थी। लेखिका के शब्दों में– "और सचमुच, उस दिन शालिनी खूब रोई थी, जी भरकर। किसी ने देखा नहीं। अपने कमरे में पड़ी, बहनों को अपनी चुहलबाजी से हँसाती, अंत में महिमा और रेखा को 'शुभ रात्रि' कहती शालिनी बिछावन में छुप गई। अपने अन्दर आँसुओं से भरे पात्र को अन्तिम बूँद तक उड़ेल दिया, पीहर से लेकर ससुराल तक के एक–एक रिश्ता को याद करती, तकिया गीला करती रही।"[6]

इसके बाद उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा। किसी पर बोझ बनकर जीना उसे स्वीकार न था। उसने संस्थान की सेवा का बीड़ा उठाया और अपने दृढ़ निश्चय के साथ वह कर्त्तव्य पथ पर चल पड़ी। दद्दा जी की अनुपस्थिति में वह सब कुछ बहुत ही अच्छे से संभालती है। जब उसे पता चलता है कि पैर लगवाने के बाद दर्शन नामक व्यक्ति भीख माँगता है तो वह सप्रमाण उसके पास जाती है और इस कृत्य के लिए उसे चाँटा भी जड़ती है। इस पर लज्जित होने की जगह दर्शन का आक्रोश उसे आन्दोलित कर देता है। वह आक्रोश में भरकर कहता है कि– "भीख न माँगे तो क्या करें? पैर बन जाने से क्या मैं कलक्टर बन जाऊँगा? कुरसी मिल जाएगी मुझे? कुरसी तोड़ते बैठा रहूँगा? मुझे रोटी तो चाहिए। फिर कहाँ से खाऊँगा? बीवी–बच्चों को क्या खिलाऊँगा? यह पैर न हुआ, मेरे लिए तो आफत............"[7] दर्शन से वास्तविकता जानकर शालिनी को अपने व्यवहार पर पश्चाताप होता है। उसे रात भर नींद नहीं आती और वह उससे क्षमा याचना करने का मन भी बनाती है।

शालिनी अपने नाम के अनुरूप सौम्य और शालीन आचरण को ग्रहण करती है। लेखिका के शब्दों में– "सदा से पीठ पर लटकती लम्बी चोटी को जूड़े का रूप दिया। .... अच्छी तरह धुली कलफ चढ़ी साड़ी के पल्लू को बड़े सलीके से पहनती। आँचल कंधे से कभी बेढंग लटकता नहीं रहता उसका। इसलिए कभी वह अस्त–व्यस्त नहीं दिखती। उलटे पल्ले को कई प्लेट बना, कंधे पर रखकर पिन लगा लेती। और इन सबसे निखरकर उसका गोरा–चिट्टा मुखड़ा दपदप कर चमक आता।"[8]

शालिनी के व्यक्तित्व की गहराई को अभिव्यक्त करते हुए लेखिका कहती है कि– "आँखे मात्र सामान्य आकार–प्रकार की होती हुई भी लुभावनी थीं, मन के भावों को होंठ एवं जिह्वा से भी पहले अपने में उतार लेने की क्षमता से भरपूर। सारे अंग अपने प्रा.तिक रंग में लिये ही रहते।.................शालिनी स्वभाव से सरल होते हुए भी, बड़ी सख्त थी। खुलकर भी बिल्कुल अन्दर थी। महिमा और रेखा उसकी अंतरंग मित्र, उनसे भी कभी राजेश के प्रति अपने उठते–गिरते भावों को नहीं जताया। उसके व्यक्तिगत जीवन में कोई आसानी से प्रवेश नहीं कर सकता था। सामाजिक जीवन में उससे कोई अलग नहीं रह पाता था।"[9]

शालिनी के इस व्यक्तित्व को केवल दद्दा जी ही अच्छी तरह समझते थे। शालिनी खुद तो आत्मनिर्भर बनती ही है साथ ही संस्थान की अन्य औरतों को भी आत्मनिर्भर बनाती है। शालिनी के मन में दद्दा जी (डॉ0 अविनाश) के प्रति अपार श्रद्धा है। संस्थान से जाते समय जब वह लन्दन से आई डॉ0 अविनाश की पत्नी को उनके साथ बुरा व्यवहार करती पाती है, तो उससे नहीं देखा जाता और वह उनके कमरे में जाकर दद्दा जी को उनका पाँव पहनाती है, जिसे उनकी पत्नी ने बाहर फेंक दिया था। उनकी पत्नी गरजती हुई जब बाहर चली गई तब शालिनी भी जाने लगी। दद्दा जी के मन में दबा शालिनी के प्रति प्रेम बाहर आ गया– "कहाँ जा रही हो? पीछे से आकर डॉ0 अविनाश ने उसके कंधों पर हाथ रख दिया था। और जैसे उस हल्के स्पर्श के नीचे दब गई शालिनी। पीछे मुड़कर देखा, डॉ0 अविनाश उसके बिल्कुल पास खड़े, नजरें मिला रहे थे। शालिनी के सारे प्रश्न थम गए। दोनों की भावनाएँ भी थम गईं।"[10]

अन्त में शालिनी दद्दा जी के साथ अपंगों की सेवा की कर्म भूमि में संग–संग चल पड़ती हैं। अपनी पिछली जिन्दगी को पीछे छोड़कर अनेक के लिए जीने का संकल्प लेकर। वस्तुतः उपन्यास में लेखिका शालिनी के माध्यम से दिव्यांग नारी की पीड़ा को अभिव्यक्त करती है तथा यह सन्देश देती है कि दिव्यांग भी स्वाभिमान के साथ जीवन व्यतीत कर सकते हैं। आवश्यकता है, तो प्रेम और सम्मान के साथ उनकी भावनाओं को समझने और आगे बढ़कर उनका साथ देने की।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 विनय कुमार पाठक, विकलांग विमर्शः दशा और दिशा, भावना प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण– 2021, पृ0सं0–9.
2. मृदुला सिन्हा, ज्यों मेंहदी को रंग, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण– 2016, पृ0सं0– 54.

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

3. वही, पृ0सं0– 53.
4. वही, पृ0सं0– 53.
5. वही, पृ0सं0– 9.
6. वही, पृ0सं0– 30.
7. वही, पृ0 सं0– 106–107.
8. वही, पृ0 सं0– 123–124.
9. वही, पृ0 सं0– 124.
10. मृदुला सिन्हा, ज्यों मेंहदी को रंग, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली संस्करण– 2016, पृ0सं0– 158.

*****